अनादि अनिधन
जिनागम पंथ जयवंत हो

जिनागम पंथ
Jain Unity Mission

109 वाँ
जन्म जंयती महोत्सव

स्थापना

"निमित्त ज्ञानी सबके स्वामी, जन-जन को सिद्धि देते हैं।
साधक मुक्तिपथ के गुरुवर, आराधक सुख लेते हैं।
जिनशासन के मार्ग प्रभावक, तन-मन-धन दुख: हरते हैं।
विमल सिन्धु के चरण कमल में, कोटि- कोटि हम नमते हैं।।

- दोहा -

हृदय विराजो आन के, आह्वानन त्रय बार।
तव गुण कीर्तन गान से, मिटे कोटि संताप।।

अनादि अनिधन
जिनागम पंथ जयवंत हो

जिनागम पंथ
Jain Unity Mission

109 वाँ
जन्म जंयती महोत्सव

जल

उज्ज्वल जल हम लेकर आये, समता नीर भराई।
जन्म-जरा-मृत्यु नाश कराकर, आठों कर्म नसाई।।
परमपूज्य 'सन्मार्ग दिवाकर' विमल सिन्धु के गुण गावें।
निज निधि ज्ञान सुधारस पाकर, भव-वन में न भटकावें।।

अनादि अनिधन
जिनागम पंथ जयवंत हो

जिनागम पंथ
Join Unity Mission

109 वाँ
जन्म जंयती महोत्सव

चन्दन

मलयागिरि का चन्दन लेकर, गुरुवर चरण चढाई।
गुरु चरणन के ही प्रसाद से, भव आताप नसाई।।
'करुणानिधि' आचार्यरत्न श्री, विमल सिन्धु के गुण गावें।
निज निधि ज्ञान सुधारस पाकर, भव-वन में न भटकावें।।

अनादि अनिधन
जिनागम पंथ जयवंत हो

जिनागम पंथ
Join Unity Mission

109 वाँ
जन्म जंयती महोत्सव

अक्षत

क्रोध कषाय की ज्वालाओं ने, खण्डित जीवन कर डाला।
अक्षत पुष्प अखण्ड चढावें, मिटे कर्म-मल सब काला।।
'निमित्तज्ञान शिरोमणि' गुरुवर, विमल सिन्धु के गुण गावें।
निज निधि ज्ञान सुधारस पाकर, भव-वन में न भटकावें।।

अनादि अनिधन
जिनागम पंथ जयवंत हो

जिनागम पंथ
Jain Unity Mission

109 वाँ
जन्म जंयती महोत्सव

पुष्प

कमल पुष्प की माल चढाकर, काम नशाने आये हैं।
बाल-ब्रह्मचारी गुरुवर हम, भक्ति सुमन ले आये हैं।।
'चक्रवर्ती-चारित्र निधि' श्री विमल सिन्धु के गुण गावें।
निज निधि ज्ञान सुधारस पाकर, भव-वन में न भटकावें।।

अनादि अनिधन
जिनागम पंथ जयवंत हो

जिनागम पंथ
Jain Unity Mission

109 वाँ
जन्म जंयती महोत्सव

नैवेद्यं

मैसूरपाक, जलेबी, घेवर, भर-भर थाल सजाये हैं।
क्षुधा वेदना से अकुलाये, अर्पण करने आये हैं।।
'वात्सल्य रत्नाकर' गुरुवर श्री, विमल सिन्धु के गुण गावें।
निज निधि ज्ञान सुधारस पाकर, भव-वन में न भटकावें।।

अनादि अनिधन
जिनागम पंथ जयवंत हो

जिनागम पंथ
Jain Unity Mission

109 वाँ
जन्म जंयती महोत्सव

दीप

मोह तिमिर से भटकाये प्रभु, सतपथ अब तक न पाया।
रत्नमयी दीपक लेकर हम, ज्ञान ज्योति पाने आये।।
'तीर्थोद्धारक-चूणामणि' श्री विमल सिन्धु के गुण गावें।
निज निधि ज्ञान सुधारस पाकर, भव-वन में न भटकावें।।

अनादि अनिधन
जिनागम पंथ जयवंत हो

जिनागम पंथ
Jain Unity Mission

109 वाँ
जन्म जंयती महोत्सव

धूप

कर्म आठ से पीड़ित हैं प्रभू, अब तक चैन नही पाया।
गुग्गल धूप दशांगी लेकर, कर्म नशाने हम आयें।।
'अतिशय योगी' बालब्रह्म यति, विमल सिन्धु के गुण गावें।
निज निधि ज्ञान सुधारस पाकर, भव-वन में न भटकावें।।

अनादि अनिधन
जिनागम पंथ जयवंत हो

जिनागम पंथ
Jain Unity Mission

109 वाँ
जन्म जंयती महोत्सव

फल

श्रीफल आम नारंगी केला, थाल सजाकर आये हैं।
मोक्ष महाफल पाने की गुरु, आशा लेकर आये हैं।।
'विद्या -खण्ड-धुरन्धर' गुरुवर, विमल सिन्धु के गुण गावें।
निज निधि ज्ञान सुधारस पाकर, भव-वन में न भटकावें।।

अनादि अनिधन
जिनागम पंथ जयवंत हो

जिनागम पंथ
Jain Unity Mission

109 वाँ
जन्म जंयती महोत्सव

अर्घ्य

आठ द्रव्य का थाल चढाकर, आठों कर्म खपावें।
अष्ट गुणों की सिद्धि पाकर, सिद्ध लोक बस जावें।।
परम तपस्वी त्यागमूर्ति श्री, विमल सिन्धु के गुण गावें।
निज निधि ज्ञान सुधारस पाकर, भव-वन में न भटकावें।।

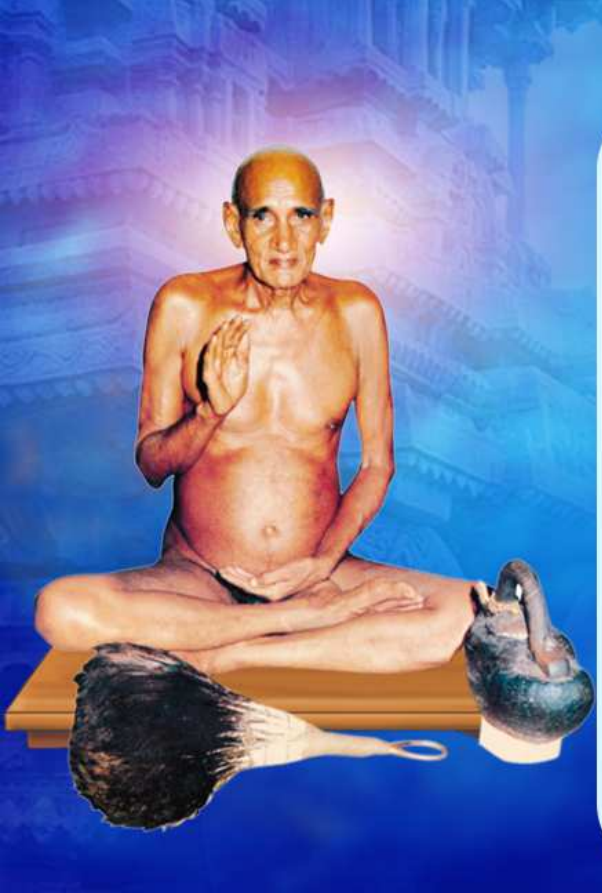

अनादि अनिधन
जिनागम पंथ जयवंत हो

सरल स्वाभी विमल गुरू, चरणन शीश नवाय।
कमल केतकी पुष्प ले, अर्पण करूँ हर्षाय।।

जै मुक्तिदूत विमल सिन्धु गुरू हैं हमारे। जै तीन लोक से निराले देव हमारे।।
जै जै तपस्वी एक नाथ आप राजते। जै जै भवि-जनों के हृदय आप सासते।।
जै वीर महावीरकीर्ति गुरू हैं तुम्हारे। जै मुक्तिदूत विमल गुरूदेव हमारे।।1।।

जै धन्य जन्म भूमि कोसमा के ग्राम की। जै-जै सुधन्य मात कटोरी के लाल की।।
जै-जै सुधन्य पिता बिहारी के प्राण की। जै-जै सुधर्म सिन्धु देवराज की।।
जै वीर धीर बाल ब्रह्मचारी सितारे। जै मुक्तिदूत विमल सिन्धु देव हमारे।।2।।

जै-जै सुसिद्ध क्षेत्र सोनागिरि के राज की। जै-जै सु यहाँ दीक्षा पाय मुनिराज की।।
जै-जै सुध्यान धारते जिनराज की मही जै-जै सु वीर धीर तपस्वी महायशी।।
जै-जै सुनिमित्त ज्ञान शिरोमणि हैं हमारे। जै मुक्तिदूत विमल गुरूदेव हमारे।।3।।

'टूण्डला' नगर था धन्य गुरू आपसे हुआ। आचार्य पद प्रदान कर, सब जग प्रसन्न हुआ।।
दे शिक्षा दीक्षा दान भव्य जीव उबारे। हैं योग्य शिष्य विश्व में जो तुम्हारे।।
जै भरत सिन्धु सूरी सुशिष्य तुम्हारे। जै मुक्तिदूत विमल सिन्धु देव हमारे।।4।।

जै शरण आपकी लहै तिरते ही जा रहे। जै कर विहार भूमि-भूमि तीर्थ निहारे।।
जै करके वन्दना सभी तो तीर्थ उद्धारे। दे भव्य जीव दीक्षा दान तुमने उबारे।
जै समवशरण रचना कर भव्य उबारे। जै मुक्तिदूत विमल सिन्धु देव हमारे।।5।।

जै राजग्रही का जो स्वाध्याय भवन भारी है। जै धन्य-धन्य गुरू स्मृति में देन थारी है।।
जै नंगा नंग मूर्तियाँ ये शान से खड़ी। जै चैबीसी निर्माण की ये श्रृंखला जुड़ी।।
जै श्रुतस्कंध के ये प्रेरक देव हमारे। जै मुक्तिदूत विमल सिन्धु देव हमारे।।6।।

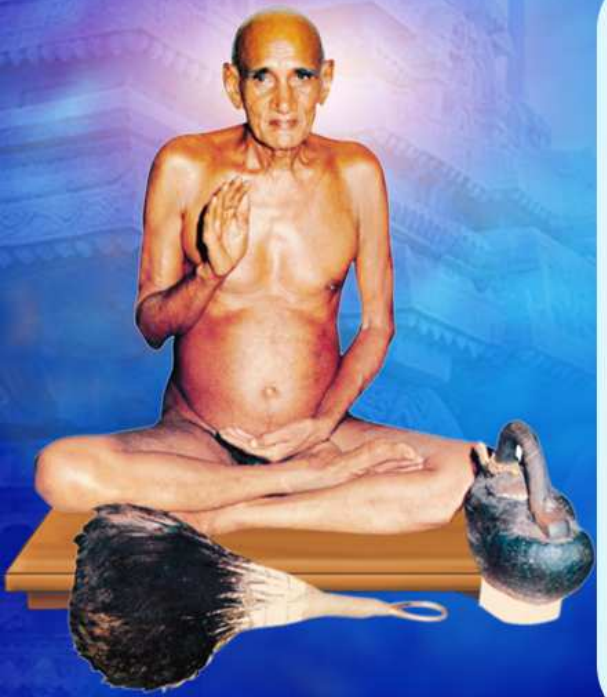

तन दुखी और मन दुखी और धन दुखी आते। नवकार मन्त्र जाप करो सबको बताते।।
लख-लख के जाप करते सब पुण्य कमाते। पापों का नाश करके सभी चैन पाते।।
जै मन्त्र-यन्त्र-तन्त्र विज्ञ गुरू ये हमारे। जै मुक्तिदूत विमल सिन्धु देव हमारे।। 7।।

करते चरण में वन्दना गुरूदेव आपके। हो पार भव समुद्र से आशीष आपके।।
नित तीन बार सिर नवाँ में वन्दना करूँ। भर भाव भक्ति से गुरू पद क्षालना करूँ।।
नित रोम रोम में बसे गुरूदेव हमारे। जै मुक्तिदूत विमल सिन्धु देव हमारे।। 8।।"

हुई वीर संवत् पच्चीस सौ इक्कीस में समाधि। यह पौष कृष्णा द्वादशी गुरुवार भारी थी ॥
श्री शिखर समेद सिद्धक्षेत्र प्राणों से प्यारा था। करके यहाँ प्रयाण तुमने आतम सुधारा था ॥
जय-जय नमन गुरुदेव कोटि-कोटि हमारे। है कोटि-कोटि नमन भरतसिन्धु संहारे ॥९॥

ॐ ह्रीं आचार्यश्री विमलसागर यतिवरेभ्यो पूर्णार्यं निर्वपामिति स्वाहा।

गुणमाला तुमरी गुरु ! शब्दों लिखी न जाय।
ज्यों सागर के मोती ले, गिनती कभी न पाय ॥१॥
स्याद्वाद वाणी विमल, स्याद्वाद पथसार।
'स्याद्वादमती' नित नमें, भव से करो सु पार ॥२ ॥

॥ पुष्पांजलिं ॥